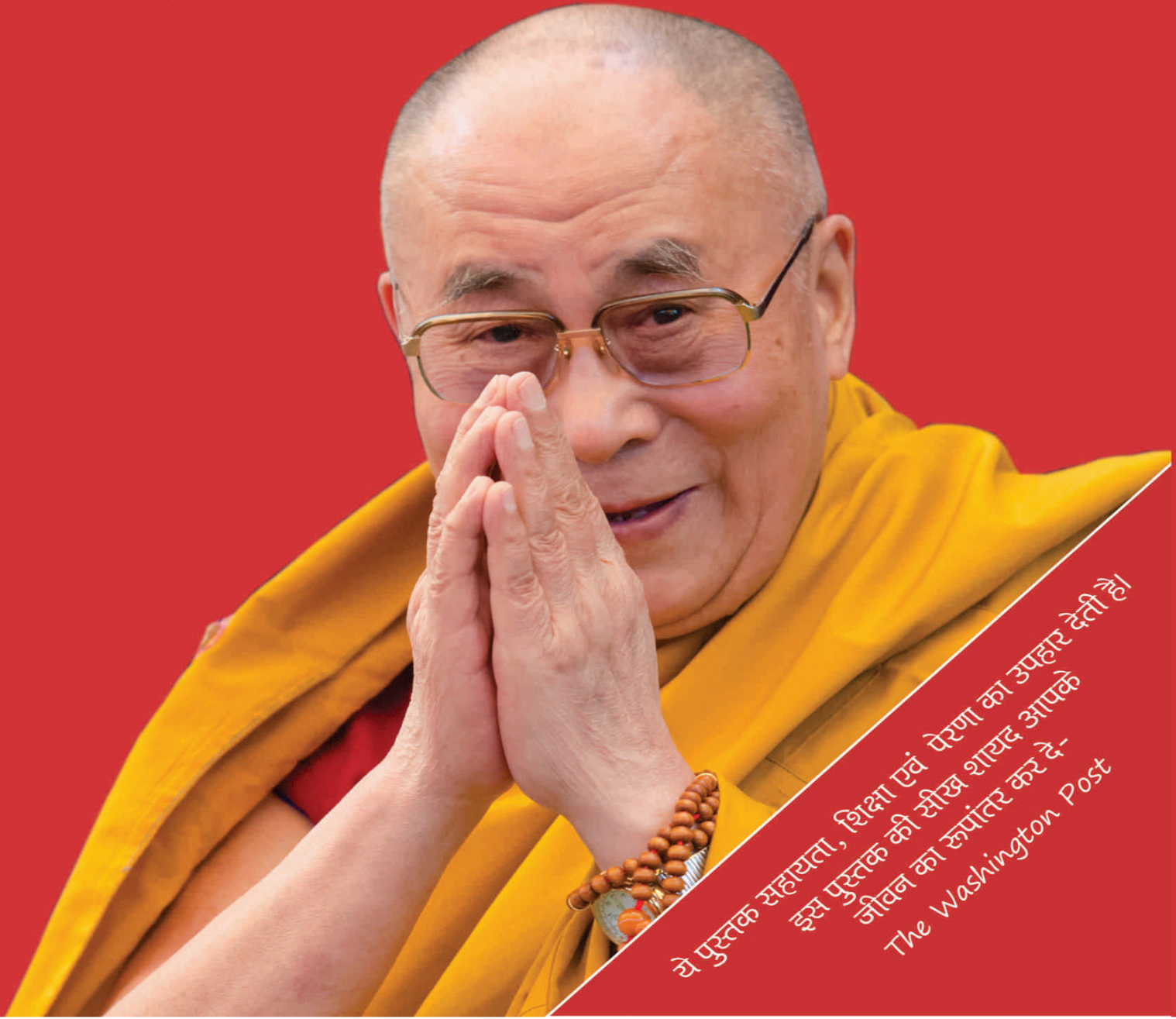


नैतिकता का सुख

परम पावन दलाई लामा

अनुवादक : लेंजिन रवि वर्मा



ये पुस्तक सहायता, शिक्षा एवं प्रेरणा का उपहार देती है।
इस पुस्तक की सीख शायद आपके
जीवन का रूपांतर कर दे-
The Washington Post

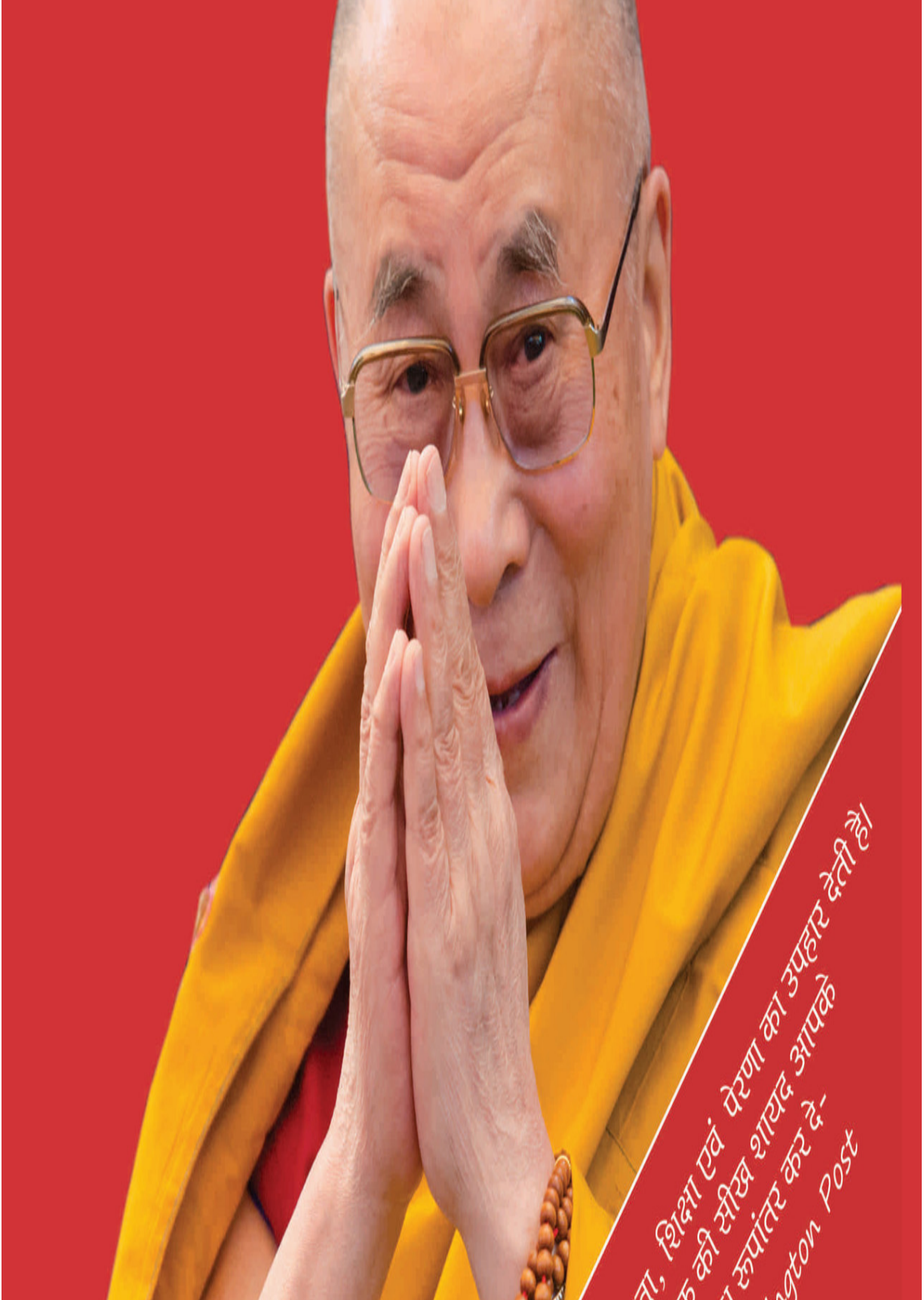
नैतिकता

का सुख

परम पावन दलाई लामा

अनुवादक : तेजिन रवि वर्मा





मा, शिक्षा एवं परेणा का उपहार देती है।
क की सीख शायद आपके
रुपांतर कर दे-
ington Post



ये पुस्तक सहाय
इस पुस्तक
जीवन को
The Washing

नैतिकता का सुख

परम पावन दलाई लामा

अनुवादक: तेंजिन रवि वर्मा

Bharati Prakashan

Banaras, India

Contents

<u>प्रस्तावना</u>	<u>3</u>
<u>अनुवादक के दो शब्द</u>	<u>5</u>
<u>अध्याय १ - आधुनिक समाज एवं मनुष्य की खुशी की तलाश</u>	<u>7</u>
<u>अध्याय २ - न जादू न रहस्य</u>	<u>14</u>
<u>अध्याय ३ - प्रतीत्यसमुत्पाद एवम् यथार्थ का स्वरूप</u>	<u>21</u>
<u>अध्याय ४ - लक्ष्य का पुनर्निर्धारण</u>	<u>28</u>
<u>अध्याय ५ - एक सर्वोत्तम भावना</u>	<u>36</u>
<u>अध्याय ६ - संयम की नैतिकता</u>	<u>44</u>
<u>अध्याय ७ - सद्गुण की नैतिकता</u>	<u>53</u>
<u>अध्याय ८ - करुणा की नैतिकता</u>	<u>63</u>
<u>अध्याय 9 - नैतिकता एवं दुःख</u>	<u>67</u>
<u>अध्याय १० - विवेक की आवश्यकता</u>	<u>72</u>
<u>अध्याय ११ - वैश्विक उत्तरदायित्व</u>	<u>78</u>
<u>अध्याय १२ - निष्ठा के सोपान</u>	<u>83</u>
<u>अध्याय १३ - समाज में नैतिकता</u>	<u>86</u>
<u>अध्याय १४ - शांति एवं निःशस्त्रीकरण</u>	<u>96</u>
<u>अध्याय १५- आधुनिक समाज में धर्म की भूमिका</u>	<u>103</u>
<u>अध्याय १६ - एक विनम्र आग्रह</u>	<u>107</u>

प्रस्तावना

सोलह वर्ष की अवस्था में अपना देश खो कर एवं चौबीस वर्ष की अवस्था में शरणार्थी बन मैंने अपने जीवन में बड़ी कठिनाइयों का सामना किया है। जब मैं उनके विषय में सोचता हूँ तो लगता है कि उनसे बचने का मेरे पास न तो कोई साधन था न ही उनका कोई अच्छा समाधान संभव था। फिर भी, जहाँ तक मेरी मानसिक शांति एवं स्वास्थ्य का प्रश्न है, मैं दावा कर सकता हूँ कि मैंने उनका सामना भली भाँति किया है। इसके फलस्वरूप मैं अपने सारे साधनों--मानसिक, शारीरिक, एवं आध्यात्मिक--के साथ उन कठिनाइयों का सामना करने में सफल रहा हूँ। अगर मैं चिंता से धराशायी हो जाता, तो मेरे स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर होता। मेरे कार्यों में भी बाधा होती।

[1]

जब अपने आसपास देखता हूँ तो पाता हूँ कि सिर्फ हम तिब्बत के शरणार्थी और विस्थापित समुदाय के लोग ही नहीं कठिनाइयों का सामना करते हैं। हर जगह एवं हर समाज में लोग कष्ट एवं विपदा झेलते हैं, वे भी जो स्वतंत्रता एवं भौतिक समृद्धि का आनन्द लेते हैं। वास्तव में, मुझे ऐसा लगता है कि हम मनुष्यों का अधिकांश दुःख हमारे स्वयं का किया है। इसीलिए एक सिद्धान्त के रूप में कम से कम इससे बचना संभव है। मैं यह भी देखता हूँ कि सामान्यतया ऐसे व्यक्ति जिनका व्यवहार नैतिक रूप से सकारात्मक होता है, वे ज्यादा प्रसन्न एवम् सन्तुष्ट रहते हैं उन लोगों की तुलना में जो नैतिकता की अवहेलना करते हैं। इससे मेरी धारणा की पुष्टि है कि अगर हम अपने विचार एवं अपने व्यवहार में बदलाव ला सकें, तो हम न तो सिर्फ कष्ट का सामना ज्यादा आसानी से करना सीखेंगे, हम बहुत सारे दुखों को उत्पन्न होने से भी रोक सकेंगे।

[2]

मैं इस पुस्तक में यह दिखाने का प्रयास करूँगा कि पारिभाषिक पद “सकारात्मक नैतिक व्यवहार” से मेरा क्या तात्पर्य है। ऐसा करने में मैं मानता हूँ कि नैतिकता एवं सदाचार की सफलता से सामान्यीकरण करना अथवा एकदम निश्चित व्याख्या कठिन है। बहुत ही विरले, अगर कभी हो भी तो, कोई घटना एकदम श्वेत या श्याम होती है। एक ही कार्य भिन्न परिस्थितियों में भिन्न नैतिकता एवं सदाचार के रंग एवं मात्रा का होता है। उसी समय, यह आवश्यक है कि इसमें हम इस बात पर एकमत हों कि सकारात्मक कार्य क्या है और नकारात्मक कार्य क्या है, सही क्या है और गलत क्या है, उचित क्या है और अनुचित क्या है। पहले लोगों में धर्म के लिए जो आदर था उसका अर्थ था कि एक या दूसरे धर्म के अभ्यास से बहुसंख्यक लोग नैतिक आचार बनाये रखते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है।

इसलिए हमें मूलभूत नैतिक सिद्धांतों की स्थापना करने के लिए निश्चय ही कोई दूसरा उपाय ढूंढना चाहिए ।

[3]

पाठक गण यह नहीं सोचें कि दलाई लामा के रूप में मेरे पास देने के लिए कोई विशेष समाधान है। इन पृष्ठों में ऐसा कुछ नहीं है जो पहले नहीं कहा गया हो । वास्तव में मुझे लगता है कि जो चिंतन एवं विचार यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं, उन्हें वे बहुत सारे लोग मानते हैं जो हम मनुष्यों की समस्याओं एवं कष्ट के समाधान के बारे में सोचते हैं और प्रयास करते हैं। मेरे कुछ मित्रों के सुझाव के उत्तर में एवं पाठकों को यह पुस्तक प्रस्तुत करने में मेरी आशा है कि उन करोड़ों लोगों को आवाज़ मिलेगी जिन्हें सार्वजनिक रूप से अपने विचारों को प्रकट करने का मौका नहीं मिलता है तथा जिन्हें मैं मूक बहुसंख्यक मानता हूँ ।

[4]

लेकिन पाठक यह भी याद रखें कि मेरी विधिवत शिक्षा पूर्ण रूप से धार्मिक एवं आध्यात्मिक रही है। बचपन से ही मेरी शिक्षा का प्रमुख (और निरन्तर) विषय बौद्ध दर्शन एवं मनोविज्ञान रहा है। खास तौर से मैंने गेलुक प्रथा के धार्मिक, दार्शनिक विद्वानों के कार्यों का अध्ययन किया है, जिस परम्परा से सारे दलाई लामा आते रहे हैं। धार्मिक बहुलवाद में पूर्णतया विश्वास होने के कारण मैंने अन्य बौद्ध परम्पराओं के मुख्य शास्त्रों का भी अध्ययन किया है । परन्तु इसकी तुलना में मुझे आधुनिक धर्मनिरपेक्ष दर्शन को जानने का कम मौका मिला है। फिर भी यह एक धार्मिक पुस्तक नहीं है । यह बौद्ध धर्म के बारे में भी नहीं है। मेरा लक्ष्य नैतिकता के लिए एक ऐसे मार्ग का आह्वान करना है, जो वैश्विक सिद्धांतों पर आधारित हो, न कि धार्मिक सिद्धांतों पर।

[5]

इस कारण वश, सामान्य पाठक गण के लिए पुस्तक लिखना बिना चुनौतियों के नहीं हुआ है, एवं यह एक समूह के परिश्रम का फल है। एक खास समस्या इस कारण से हुई कि तिब्बती भाषा के कई अनिर्वाय शब्दों का आधुनिक भाषा में अनुवाद करना कठिन है। इस पुस्तक का उद्देश्य एक दर्शनशास्त्र का आलेख बनना नहीं था, इसलिए मैंने प्रयास किया है कि मैं इन तथ्यों का ऐसे वर्णन करूँ ताकि जो विशेषज्ञ पाठक नहीं हैं वे भी समझ सकें एवं उनका अन्य भाषाओं में भी स्पष्ट अनुवाद हो सके। ऐसा करने में, एवं उन लोगों के लिए सुस्पष्ट व्याख्या करने में जिनकी भाषा एवं संस्कृति मेरे से काफी भिन्न हो, यह संभव है कि तिब्बती भाषा की गूढ़ता खोयी हो, और कुछ अनचाहे अर्थ जुड़ गये हों। मेरा विश्वास है कि सतर्क संपादन ने ऐसा न्यूनतम कर दिया हो । जब भी कोई ऐसी गलती सामने आती है, मुझे आशा है कि आने वाले संस्करण में मैं उनका सुधार करूँगा । इस बीच में, इस

विषय में उनकी सहायता के लिए, इसे इंग्लिश में अनुवाद करने के लिए, एवं उनके अनगिनत सुझाओं के लिए मैं डॉक्टर थुप्टेन जिन्पा को धन्यवाद देता हूँ। मैं श्री ए आर नार्मन को भी संशोधन के लिए धन्यवाद देता हूँ। यह बहुमूल्य रहा है। अंत में, मैं उन सब को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को सफल बनाने में सहायता की है।

[6]

धर्मशाला, फ़रवरी १९९९

मनन योग्य प्रश्न

१. “सकारात्मक नैतिक व्यवहार” से लेखक का क्या तात्पर्य है?
२. आप नैतिकता के ऐसे मार्ग की सम्भावना के बारे में क्या सोचते हैं जो वैश्विक सिद्धांतों पर आधारित हो, न कि धार्मिक सिद्धांतों पर।

अनुवादक के दो शब्द

मेरा इस पुस्तक से सम्बन्ध पंद्रह साल से ज्यादा हो गया है, पहले पाठक के रूप में फिर अनुवाद के दौरान। बौद्ध मार्ग और परम पावन दलाई लामा जी से परिचय, दोनों ही सौभाग्य मुझे इस पुस्तक के द्वारा मिला। जीवन के कष्टों का सामना करने में इस पुस्तक से इतनी मदद मिली है कि अफसोस होता कि यह मुझे वर्षों पहले क्यों नहीं मिली। अनुवादन में प्रयास लगाने की पीछे मेरी कामना है कि मेरी मातृ भूमि में बहुत से लोगों को इससे वही लाभ मिलेगा जो मुझे मिला है।

इस पुस्तक से मुझे जो पहली सीख मिली वह यह कि, नैतिक आचरण मेरे ही हित में है। यह वाक्य शायद काफी सामान्य लगे लेकिन इस पुस्तक को पढ़ने के पहले मेरी यह धारणा थी कि नैतिकता अच्छी बात है, परन्तु नैतिक व्यवहार से कर्ता की कुछ न कुछ हानि ही होती है। शायद कुछ लोग ऐसे व्यक्ति को मूर्ख भी समझें। इस विषय पर हिंदी के प्रख्यात व्यंगकार श्री हरि शंकर परसाई जी का निबंध “बेचारा भला आदमी” पढ़ने योग्य है। परम पावन दलाई लामा जी की इस कालजयी रचना के प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध में मेरा विचार है कि यदि लोग नैतिक आचरण में सद्यःनिहित अपने हित-लाभ को समझेंगे तो इससे लोगों में नैतिक आचरण के प्रति उत्साह बढ़ेगा और जगत का कल्याण होगा।

मुझे दूसरी समझ यह मिली कि नैतिकता एक जटिल एवम् सूक्ष्म विचार का विषय है। सिर्फ यह कह देना पर्याप्त नहीं है कि “झूठ बोलना पाप है” अथवा “चोरी करना अनुचित है”। श्री दलाई लामा जी नैतिकता की विवेचना, हमारे आचरण के दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रसंग में करके, हम सब को इस विषय पर नवीन दृष्टिकोण से सोचने समझने का अवसर देते हैं।

मैंने एक बार श्री दलाई लामा जी से सुना था कि, स्वार्थ दो तरह को होता है - बुद्धिमानी वाला स्वार्थ एवं मूर्खता वाला स्वार्थ। नैतिक आचरण का अभ्यास बुद्धिमानी वाला स्वार्थ है। चूँकि स्वार्थ सुनने में थोड़ा कठोर लगता है, अतः मेरे एक मित्र ने सुझाव दिया कि हम इसे जागरूकता सहित स्वयम् का हित करने का भाव कहें।

ज्यादातर लोग श्री दलाई लामा जी को एक धर्मगुरु के रूप में जानते हैं एवं अक्सर धर्मगुरुओं की पुस्तकें प्रवचन वाली होती हैं किन्तु यह पुस्तक प्रवचन नहीं है। मैं इस पुस्तक को अपनी भौतिक शास्त्र, रासायन शास्त्र एवं गणित आदि विषयों की पुस्तकों के साथ रखता हूँ। इस पुस्तक में श्री दलाई लामा जी ने अपने अनुभव के आधार पर मानव मात्र को जीवन जीने की शैली सिखाई है जिसका हम अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करके स्वयम् इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि हमें इससे क्या लाभ हो रहा है, क्या नहीं।

इस पुस्तक को पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि जिस व्यक्ति का आचरण नैतिकता, स्नेह एवं करुणा युक्त होता है वह उन लोगों से ज्यादा सुखी होता है जो इन धारणाओं की अवहेलना करते हैं। साथ ही यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि, नैतिक व्यवहार द्वारा औरों के कल्याण में ही हमारा स्वयम् का कल्याण भी निहित है।

इस पुस्तक में आप दुःख एवं पीड़ा का कई बार उल्लेख देखेंगे। सामान्यतया हम इन शब्दों को पर्यायवाची समझते हैं। परन्तु इस पुस्तक में दोनों का तात्पर्य भिन्न है। पीड़ा का अर्थ है, अनिवार्य शारीरिक कष्ट जैसे जन्म, रोग, वृद्धावस्था, दुर्घटना इत्यादि एवं दुःख का तात्पर्य मानसिक अवस्था से है। दुःख वह है जो ऐसे व्यक्ति को भी होता है जिसका पेट भरा होता है, जिसके तन पर अच्छे वस्त्र होते हैं, बैंक में पर्याप्त धन होता है। दुःख ऐसी चीज़ है जो वातानुकूलित कक्ष में बैठने वाले व्यक्ति को भी व्यथित करती है। श्री दलाई लामा जी इस मानसिक दुःख को व्यर्थ का क्लेश कहते हैं। इस पुस्तक में उन्होंने वह सारे उपाय बताये हैं जिसकी सहायता से हम अपने इन व्यर्थ दुःखों का उन्मूलन कर सकते हैं। श्री दलाई लामा जी ने एक बार कहा था पीड़ा अनिवार्य है लेकिन दुःख कृत्रिम है। इस पुस्तक में उन्होंने एक जीवन शैली का वर्णन किया है जिससे हम दुःख की सम्भावना को न्यूनतम कर सकते हैं।

मैं शिक्षा एवं व्यवसाय से इंजीनियर हूँ एवं हम इंजीनियरों का स्वभाव है कि हम किसी भी शिक्षा को बिना तर्क के स्वीकार नहीं कर सकते। इस पुस्तक में श्री दलाई लामा जी ने सिर्फ उचित एवं अनुचित की परिभाषा ही नहीं दी है, बल्कि उन्होंने उचित को सटीक तर्कों व उदाहरणों द्वारा समझाया भी है। मेरे लिए यह पुस्तक उपयोगी रही है क्योंकि उचित एवं अनुचित की परिभाषा के साथ उन्होंने एक अत्यन्त सहज जीवन शैली की शिक्षा दी है जिससे हम सभी अपने मानसिक दुःख को कम कर सकते हैं।

श्री दलाई लामा जी पूरे विश्व में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। मैंने उन्हें पहली बार सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका में देखा था। मैं दर्शकों में उनके लिए स्नेह एवं आदर को देख कर अचम्बित था। यह भले हास्यप्रद लगे, मैंने कई लोगों में इस बात को लेकर ईर्ष्या का भाव देखा एवं कई लोगों को श्री दलाई लामा जी जैसे प्रसिद्ध बनने का प्रयास करते हुये भी देखा है। इस पुस्तक में उन्होंने वह सारे रहस्य बताये हैं जिनके कारण उनका व्यक्तित्व इतना चुंबकीय हैं। लोग छोटी से छोटी बात पर भी उनके ठहाके लगाकर हंसने की क्षमता से आश्चर्यचकित रहते हैं। इस पुस्तक में श्री दलाई लामा जी ने वह सारे सुझाव दिये हैं जिनका पालन करने से व्यक्ति जीवन की सारी कठिनाइयों के पश्चात भी उनकी तरह प्रसन्नचित्त रह सकता है। श्री दलाई लामा जी ने अपने जीवन में जिन विराट कठिनाइयों का सामना किया है वह हम सबको पता है, इन सब के बावजूद उनकी सद्यःविद्यमान प्रच्छन्न हँसी सभी को मंत्रमुग्ध कर देती है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतवर्ष में समृद्धि बढ़ी है। मैं बिहार के पिछड़े इलाकों में काफी समय व्यतीत करता हूँ एवं देखता हूँ कि वहाँ भी लोगों के रहन सहन के स्तर में काफी बदलाव हुआ है। बड़े शहरों में यह बदलाव और भी अधिक है। आज भारत के बड़े नगरों में अमेरिका एवं यूरोप के सुख-साधन आसानी से उपलब्ध हैं। दुर्भाग्यवश शारीरिक या भौतिक सुख एवं मानसिक सुख में बहुत गहरा सम्बन्ध नहीं है। यह दृश्य काफी कष्टप्रद होता है कि एक व्यक्ति सारी शारीरिक व भौतिक सुख सुविधा के बावजूद मन से चिंतित एवं दुखी रहता है।

आज भारत के हर ऐसे समृद्ध व्यक्ति, जिसे पर्याप्त शारीरिक व भौतिक सुख प्राप्त है, को नैतिकता की समझ की बहुत आवश्यकता है ताकि वह मानसिक रूप से भी सुखी हो सकें। परम पावन श्री दलाई लामा जी की यह पुस्तक हर आधुनिक भारतीय व्यक्ति के लिए अनिवार्य होनी चाहिए।

मुझे इस प्रयास में कई लोगों से बड़ी मदद मिली है। उसमें से मुख्य हैं भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, कानपुर के प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा जी, सारनाथ स्थित केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नवांग समतेन जी एवं राजेश कुमार मिश्र जी, कटिहार के निर्भीक पत्रकार राजरत्न कमल जी एवं भारती प्रकाशन, वाराणसी के अधिष्ठाता श्री आशुतोष पाण्डेय जी। प्रोफेसर अरुण शर्मा जी लम्बे समय से मेरे मार्गदर्शक, मित्र एवं भाई की तरह रहे हैं। उन्होंने एवं प्रोफेसर नवांग समतेन जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर मेरे अनुवाद की गलतियों को सुधारा है। कटिहार के निर्भीक पत्रकार श्री राजरत्न कमल जी को मैं अपना कार्य सबसे पहले भेजता था और मैं डरता था कि वे मेरी हिंदी की अशुद्धियों से परेशान होते होंगे, लेकिन उन्होंने मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं होने दिया। सारनाथ स्थित केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के प्रमुख श्री राजेश कुमार मिश्र के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। उनके पिता श्री शिव प्रसाद मिश्र जी एवं उन्होंने इस प्रयास में काफी सहायता की है। राजेश जी ने ही मेरा परिचय भारती प्रकाशन के अधिष्ठाता श्री आशुतोष पाण्डेय जी से करवाया। श्री आशुतोष पाण्डेय जी से मेरा सम्बन्ध होना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। उनके निरन्तर तकाज़ा करने के कारण मैं यह कार्य समय से पूर्ण कर पाया। ऐसी पुस्तकों के प्रकाशक आशुतोष जी जैसे लोग ही हो सकते हैं जिनके लिए प्रकाशन सिर्फ व्यवसाय नहीं है बल्कि वह इस माध्यम से देश का कल्याण भी करना चाहते हैं।

अंत में मैं परम पावन श्री दलाई लामा जी को नमन करता हूँ। सम्पूर्ण मानवता के लिए नैतिकता का ऐसा स्नेहपूर्ण एवं धर्म निरपेक्ष व्याख्यान उनके जैसा महापुरुष ही कर सकता है।

रवि वर्मा

कटिहार, बिहार, भारत एवं रॉकलिन, कैलिफ़ोर्निया, संयुक्त गणराज्य अमेरिका

अध्याय १ - आधुनिक समाज एवं मनुष्य की खुशी की तलाश

अन्य लोगों की तुलना में मैं आधुनिक समाज का नवागंतुक हूँ। यद्यपि मैं अपनी मातृभूमि को एक लंबे समय पूर्व 1959 में छोड़ चुका हूँ, और यद्यपि भारत में एक शरणार्थी की अवस्था मुझे वर्तमान समाज के काफी पास लायी है। अपने जीवन के आरम्भ के वर्षों में मैं बीसवीं शताब्दी के यथार्थ से अलग थलग ही रहा। कुछ हद तक इसकी वजह रही है मेरी दलाई लामा के रूप में नियुक्ति। मैं बहुत छोटी उम्र में भिक्षु बन गया था। इस से यह भी दिखता है कि हम तिब्बत के लोगों को अपने देश को बाकी दुनिया से अलग-थलग पहाड़ों की ऊँची श्रृंखलाओं के पीछे रखने का निर्णय मेरी दृष्टि में गलत था।

[1]

किन्तु आज के दिन मैं काफी यात्रा करता हूँ और मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मैं लगातार नये लोगों से मिलता रहता हूँ। इसके अतिरिक्त यह भी है कि जीवन के अनेक क्षेत्रों के लोग मुझसे मिलने आते हैं। बहुत से लोग बहुत कष्ट उठाकर, कुछ दूँढते हुए, धर्मशाला आते हैं जो एक पर्वतीय पर्यटन स्थल है और प्रवास की अवधि में मेरा निवास स्थल है। इन लोगों में ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिन्होंने बड़े कष्ट सहे हैं, कुछ लोगों के माता पिता का देहांत हो चुका होता है; कुछ के परिवार के सदस्य अथवा मित्रों ने आत्महत्या की होती है; कुछ कैंसर अथवा एड्स जैसी बीमारियों से ग्रस्त होते हैं। इसके अलावा, स्वभावतः मेरे साथी तिब्बत के लोग होते हैं जिनकी कठिनाइयाँ एवं परेशानियों की अपनी एक दास्ताँ होती है। दुर्भाग्य से, कई लोगों की यह अवास्तविक अपेक्षा होती है कि मेरे पास कुछ अद्भुत शक्ति है या मैं कुछ वरदान दे सकता हूँ। लेकिन मैं सिर्फ एक साधारण मनुष्य हूँ। मैं ज्यादा से ज्यादा यह कर सकता हूँ कि मैं उनके दुःख में हिस्सा ले उनकी मदद करने का प्रयत्न कर सकूँ।

[2]

जहाँ तक मेरा प्रश्न है, सारी दुनिया एवं जीवन के अनेक क्षेत्रों के बहुत से लोगों से मिल कर मुझे यह एहसास होता कि हम सभी मनुष्य एक जैसे हैं। यह सत्य है कि मैं जितना ज्यादा दुनिया को देखता हूँ उतनी ही यह बात साफ दिखती है कि हमारी स्थिति जो भी हो, हम समृद्ध हों या गरीब, शिक्षित हों या अशिक्षित, हमारी जाति, लिंग, धर्म जो भी हो, हम सभी चाहते हैं कि हम खुश रहें एवं हमें दुःख न हो। हमारे सारे सोच समझ कर किये गए कार्यों को और एक प्रकार से अपनी वर्तमान स्थिति की सीमा के परिप्रेक्ष्य में हमारे जीवनयापन के सारे निर्णयों को हम इस वृहत प्रश्न के रूप में देख सकते हैं जो हम सभी के सामने है, “मैं कैसे सुखी रह सकता हूँ?”

[3]